बबूश्का और तीन राजा

रूसी बालकथा पर आधारित

रुथ, चित्र : निकोलस, हिंदी : विदूषक

बबूश्का और तीन राजा

रूसी बालकथा पर आधारित

रुथ, चित्र : निकोलस, हिंदी : विदूषक

यह कहानी बहुत पुरानी है, और एक दूर-दराज़ देश की है. कड़क सर्दी पड़ रही थी और चिलचिलाती ठंडी हवा एक छोटे घर के चारों ओर तेज़ी से बह रही थी.

घर के अन्दर बबूश्का फर्श पर झाड़ू-पोछा लगा रही थी. वो चूल्हे में लकड़ी डाल रही थी. उस बूढ़ी औरत को अपने छोटे से घर की कम सुख-सुविधाओं में गर्व था. बाहर बहुत तेज़ बर्फ गिर रही थी और सांय-सांय करती हुई तेज़ हवा चल रही थी. पर बबूश्का अपने छोटे से घर में चूल्हे के सामने आंच ताप रही थी. धीरे-धीरे दिन ढला और रात हुई. फिर बबूश्का को तेज़ हवा के साथ-साथ बिगुल की आवाज़ भी सुनाई दी.

उसका मतलब था कि कुछ लोग उसके घर की तरफ आ रहे थे. उस जलूस में सबसे आगे एक बर्फ-गाड़ी थी जिसे तीन सफ़ेद घोड़े खींच रहे थे.

उस बर्फ-गाड़ी में तीन शानदार आदमी बैठे थे. वो गहरे लाल रंग के रेशम के चोगे पहने थे और उनके सिरों पर रत्न-जटित मुकुट थे. बर्फ-गाड़ी के पीछे-पीछे घोड़ों पर सैनिक सवार थे. और उनके पीछे पैदल फौजी थे.

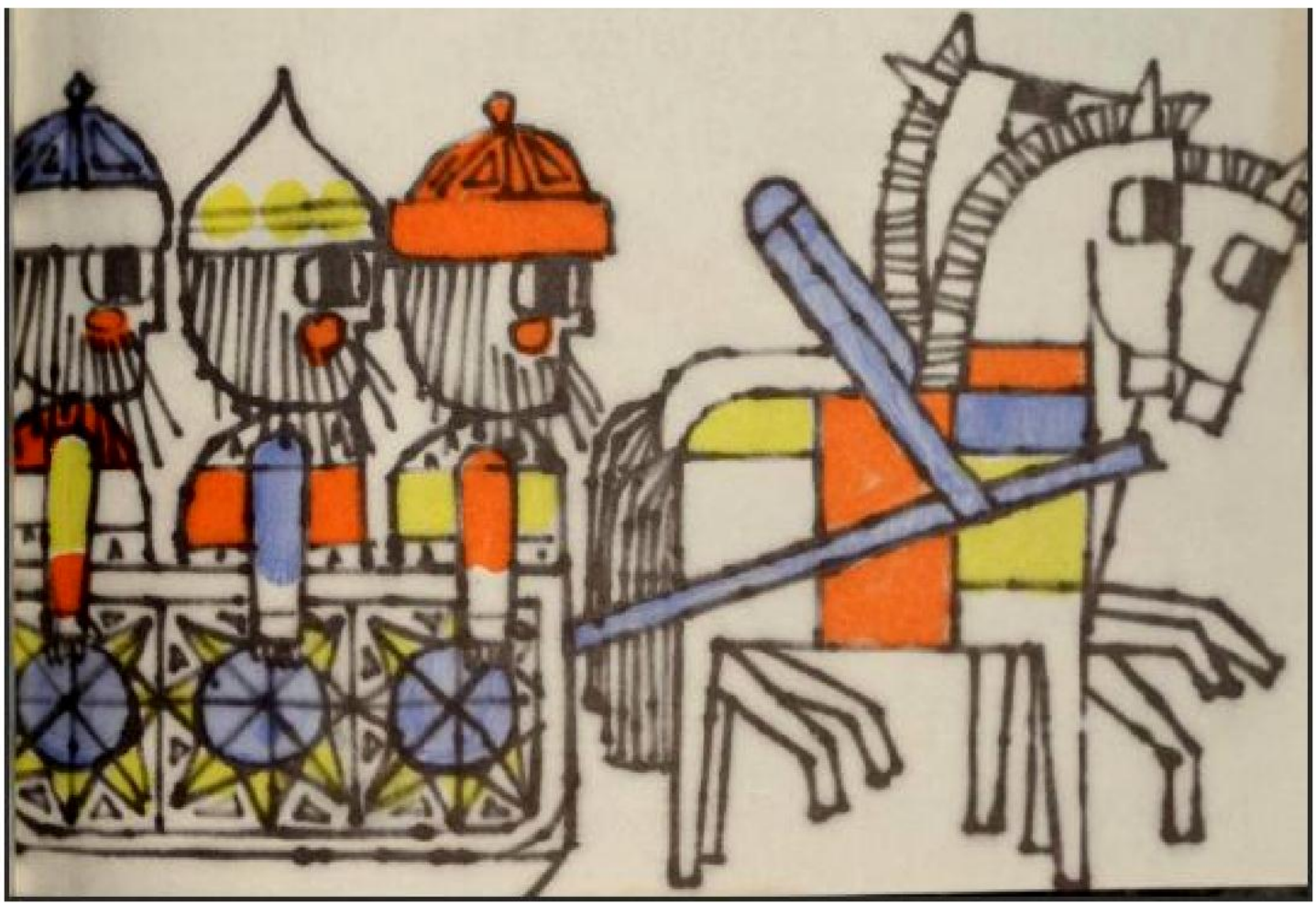

वो जलूस बबूश्का की छोटी झोपड़ी के सामने आकर रुका. किसी ने बबूश्का की झोपड़ी का दरवाज़ा खटखटाया. जब उसने दरवाज़ा खोला तो उसके सामने तीन अजनबी खड़े थे. उस गरीब औरत ने उनके महंगे, राजसी कपड़ों, स्नो से सफ़ेद दाढ़ी और दयालु आँखों को बड़ी उत्सुकता से देखा. “कौन थे वो लोग?” बबूश्का ने सोचा.

बबूश्का के सोच को पढ़कर उनमें से एक आदमी ने जवाब में मुस्कुराते हुए कहा, “हम लोग उस चमकते सितारे का पीछा कर रहे हैं, जहाँ पर एक नए बच्चे का जन्म हुआ है. पर अब हम लोग बर्फ में पूरी तरह भटक गए हैं.

“तुम हमारे साथ चलो बबूश्का. उस बच्चे को खोजने में, उसे उपहार भेंट देने में, और उसके जन्म पर ख़ुशी मनाने में हमारी मदद करो.”

बबूश्का बर्फ में थरथरा रही थी. उसने अपने कन्धों पर एक पतला शाल लपेटा. “मेहरबान! आप लोग घर में आएं और कुछ देर आग की गर्मी तापें. मैंने अभी तक दिन का काम पूरा नहीं किया है. इस भयावह और बेरहम रात में बाहर जाने के नाम से ही मैं काँप रही हूँ. सुबह का समय, रात से बेहतर होगा. आज रात आप मेरे इस छोटे से घर में आराम करें. सुबह मैं आपके साथ ज़रूर चलूंगी.”

“हमारे पास वक्त की बहुत कमी है, बबूश्का,” अजनबियों ने कहा. “अगर तुम तुरंत हमारे साथ नहीं आओगी तो हम खुद अपनी यात्रा ज़ारी रखेंगे.” उसके बाद वो अजनबी उस बर्फीले तूफ़ान में गायब हो गए.

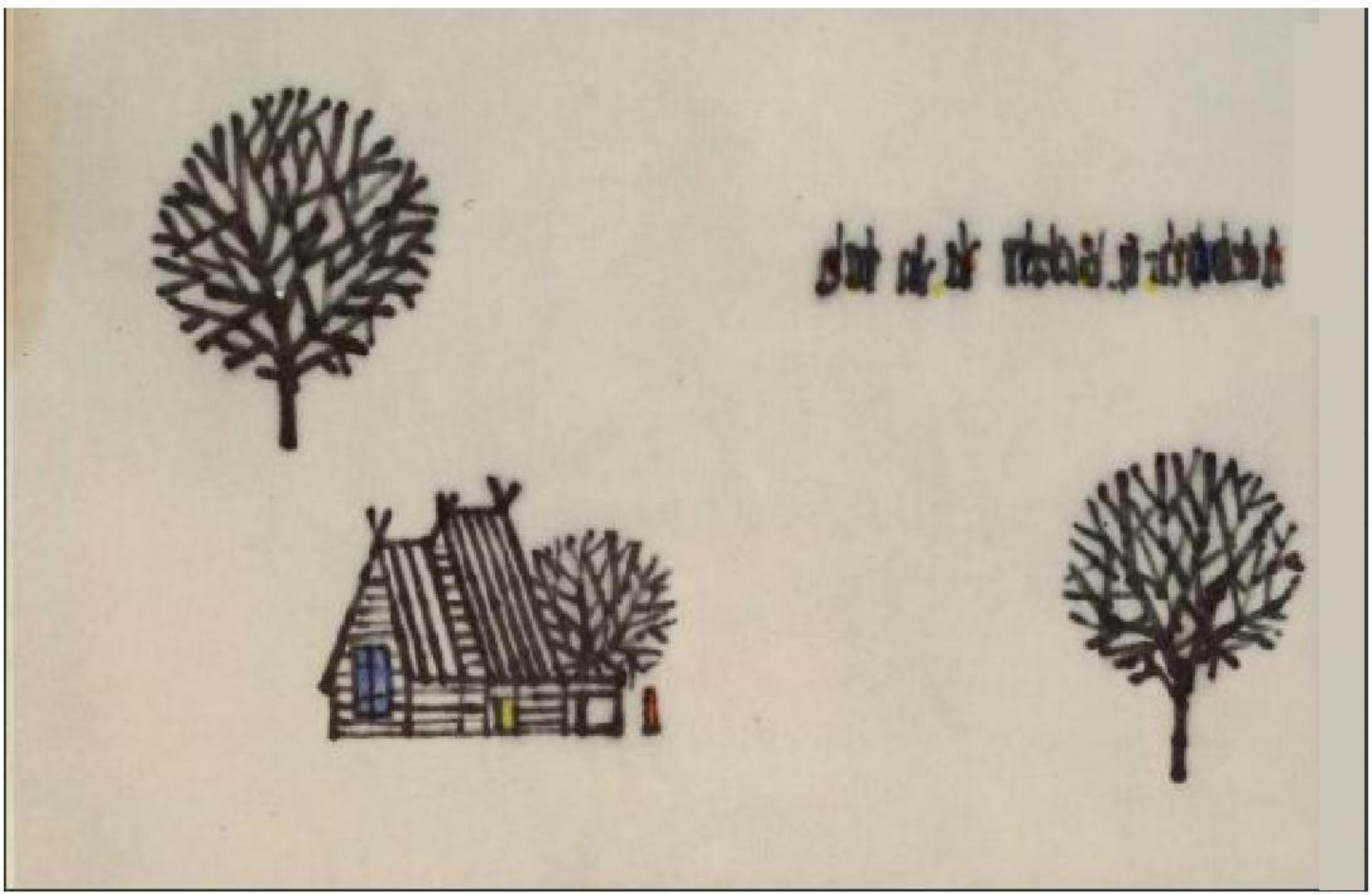

बबूश्का दुबारा से घर के सफाई कामों में व्यस्त हो गई. काम ख़त्म करने के बाद वो आग के सामने अकेले बैठकर रात का भोजन खाने लगी. जलती लकड़ियों की गर्मी अब उसके ह्रदय को स्पर्श कर रही थीं. बच्चे के जन्म की खबर सुनकर उसके दिल में ख़ुशी और दया की एक लहर उमड़ी. “कितने सजे-धजे थे वो तीनों! देखने में एकदम राजा लगते थे,” बबूश्का ने जोर से कहा. “वो किसी साधारण बच्चे के दर्शन करने नहीं जा रहे होंगे. हाँ! मुझे भी उनके पीछे-पीछे जाना चाहिए!” मैं भी नए बच्चे के दर्शन करूंगी, और उसे कोई भेंट दूँगी. अब यही बबूश्का की दिली चाह बन गई. यही विचार उसके दिमाग में कौंधता रहा, बिल्कुल वैसे, जैसे अँधेरे में कोई मोमबत्ती जलती है.

फिर बबूश्का सुबह होने से पहली की उठी और उसने यात्रा की तैयारी शुरू की. उसने एक थैले में कुछ छोटे-मोटे, सस्ते उपहार रखे. जैसे ही नया दिन शुरू हुआ बबूश्का ने स्नो पर अपनी यात्रा शुरू की. बूढ़ी औरत ने कल रात जलूस द्वारा बनाये पथ को खोजने की बहुत कोशिश की. पर स्नो ने पिछली रात के सब पदचिन्ह ढँक दिए थे.

फिर वो रुक-रुक कर हर अजनबी से पूछती. “वो तीन राजा किस दिशा में गए? वही लोग जो नवजात शिशु के दर्शन करना चाहते थे?” उसने बूढ़े लोगों से पूछा, उसने युवा राहगीरों से भी पूछा. पर कोई भी बबूश्का की मदद नहीं कर पाया. उसके बाद बबूश्का बस स्नो में खड़े-खड़े बच्चों को खेलते हुए देखती रही. उसके आसपास आवारा कुत्ते भूंक रहे थे और नाच रहे थे. पर बबूश्का देरी नहीं करना चाहती थी. इसलिए वो आगे बढ़ी.

बबूश्का गाँव-गाँव, घर-घर पूछती हुई आगे बढ़ी, “क्या तुम में से किसी ने उस नए शिशु को देखा है?” और हर बार उसे वही उत्तर मिलता – किसी ने भी उसे नहीं देखा था. बिना रुके, बिना सुस्ताए बबूश्का उस नवजात शिशु की खोज में आगे बढ़ती गई.

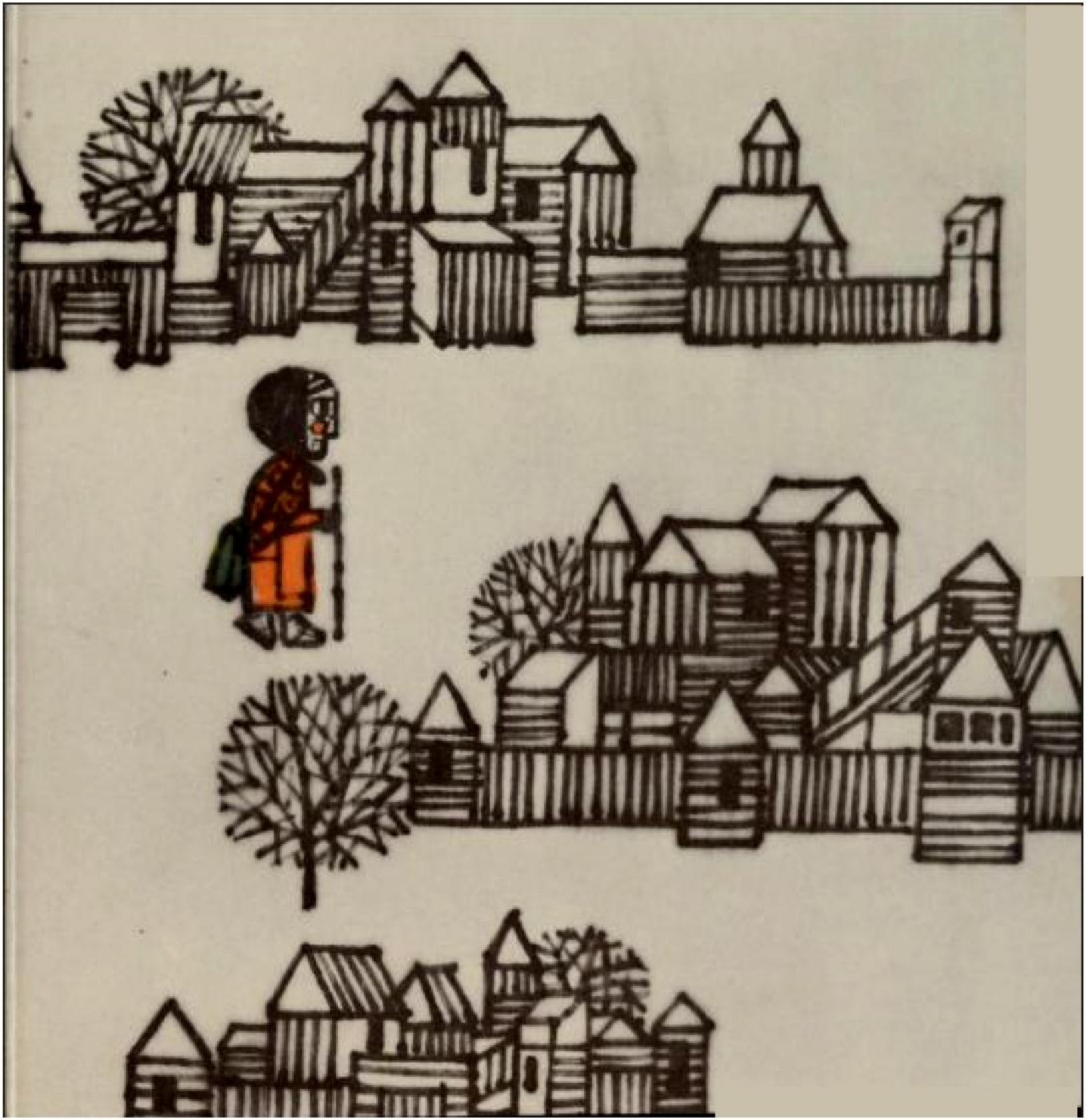

लोग ऐसा कहते हैं कि हर साल जब किसी नए बच्चे के जन्म की खबर आती है तब बबूश्का नई उम्मीद के साथ पूरे देश में उसे खोजती है.

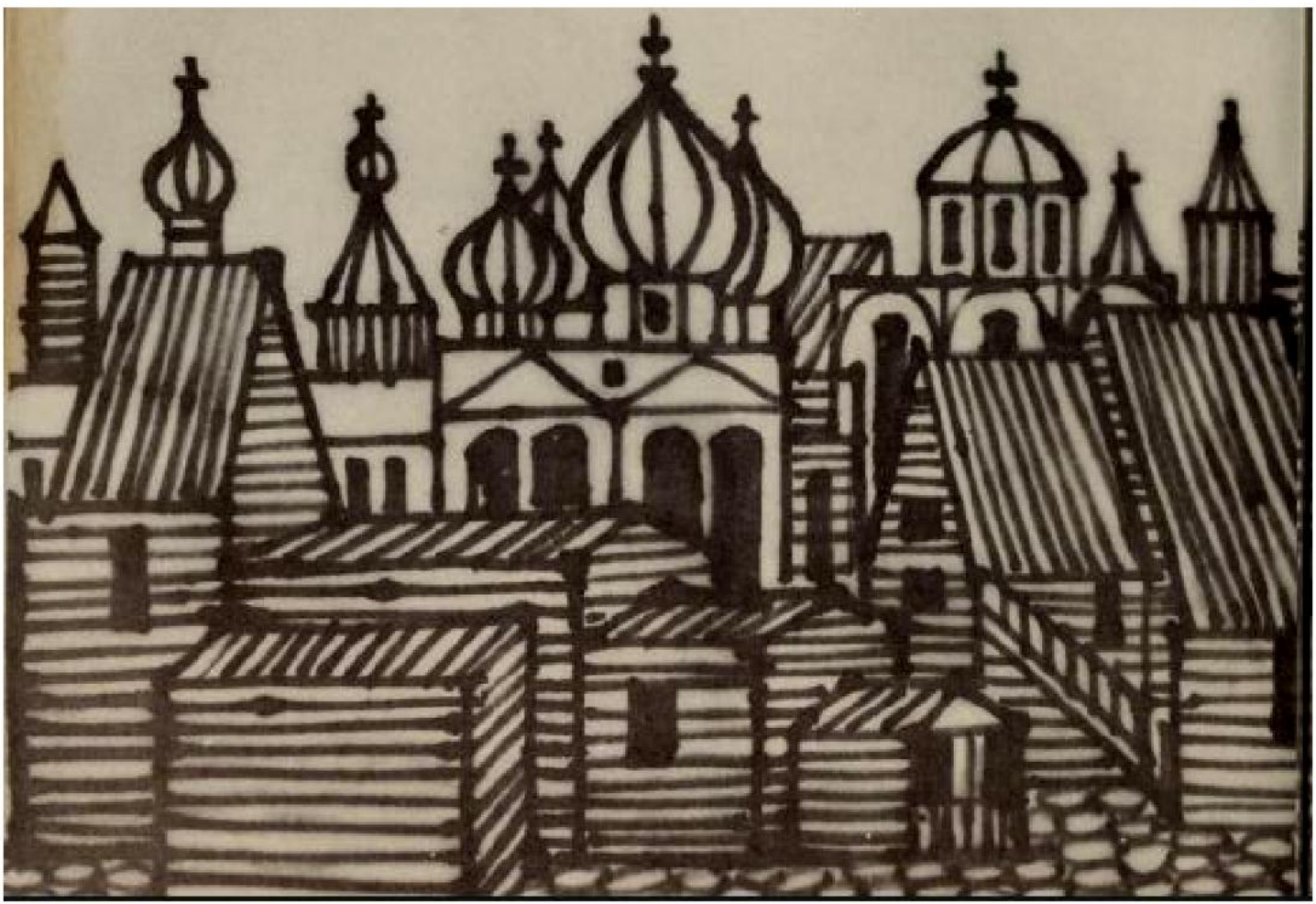

लोग यह भी कहते हैं कि हर साल छोटे बच्चे बबूश्का के आने का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं. बबूश्का रात के सन्नाटे में बच्चों के लिए अपने लाए उपहार छोड़ जाती है. बच्चों को बबूश्का के सस्ते, कम-कीमत के उपहारों में अपार आनंद मिलता है.

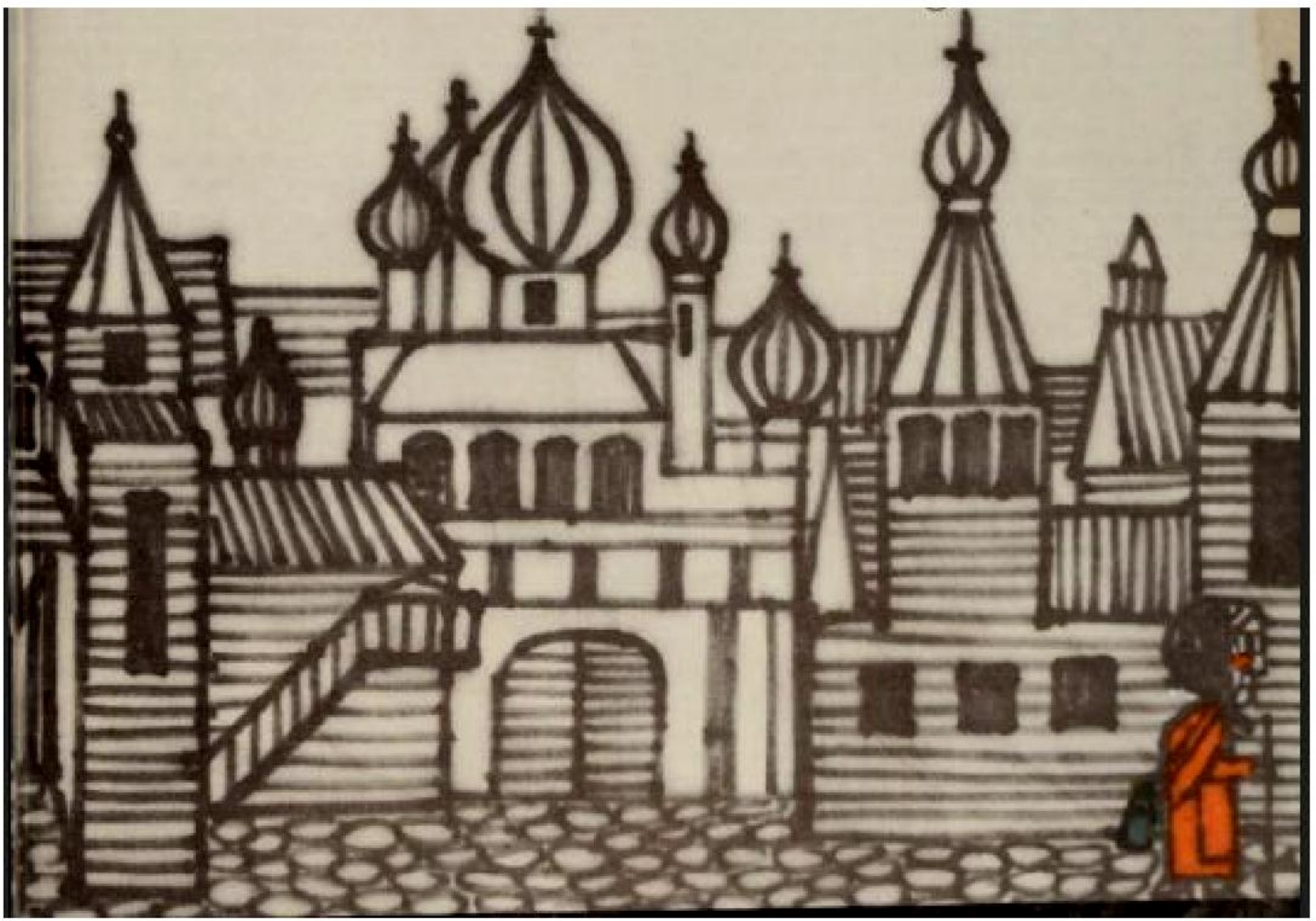

“सरल पर अत्यंत सुन्दर ...” - न्यू-यॉर्क टाइम्स पुस्तक समीक्षा

“यह एक रूसी लोक कथा है. यह कहानी एक बूढ़ी औरत के बारे में है जो तीन राजाओं के साथ जाने से मना कर देती है. वो खुद नए जन्मे बच्चे को खोजने निकलती है. क्योंकि उसे वो नवजात शिशु नहीं मिलता है, इसलिए बूढ़ी औरत अपने इस प्रयास को लगातार ज़ारी रखती है. पुस्तक के चित्र और डिज़ाइन उत्कर्ष हैं.” – बुक-लिस्ट